हफ़्तावार रिसाला : 297
Weekly Booklet : 297

Nek Bandon Ki Shaan (Hindi)

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "नेकी की दा'वत" की
एक क़िस्त मअ़ तरमीम व इज़ाफ़ा बनाम

नेक बन्दों की शान

सफ़ह़ात 24

100 घरों से बलाएं दूर 02
फ़ारूक़ व मुश्ताक़ का मज़ार 09
मोमिन की फ़िरासत 13
इल्मे ग़ैब के मुतअ़ल्लिक़ अक़्वाल 19

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **नेक बन्दों की शान**

सिने त़बाअ़त : रमज़ानुल मुबारक **1444** हि., अप्रैल **2023** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

नेक बन्दों की शान

येह रिसाला **(नेक बन्दों की शान)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद –1, गुजरात।

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून ''नेकी की दा'वत'' के सफ़ह़ा 358 ता 375 से लिया गया है।

नेक बन्दों की शान

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 22 सफ़ह़ात का रिसाला ''नेक बन्दों की शान'' पढ़ या सुन ले उसे अपने नेक बन्दों से मह़ब्बत रखने और नेकों की सोह़बत इख़्तियार करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और उसे बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते आ़रिफ़ बिन उ़ब्बाद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते अबुल ह़सन शाज़िली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया है कि मैं सफ़र में था। एक रात ऐसी जगह पहुंचा जहां ख़ौफ़नाक दरिन्दे ब कसरत थे। दरिन्दे मेरे दरपए आज़ार थे। मैं एक ऊंचे टीले पर बैठ गया और कहा : ख़ुदा की क़सम मैं **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़ूंगा क्यूं कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जो शख़्स मुझ पर एक बार दुरूद शरीफ़ भेजता है **अल्लाह** पाक उस पर दस बार दुरूद (या'नी रह़मत) भेजता है।'' जब **अल्लाह** पाक मुझ पर दस रह़मतें भेजेगा तो मैं रात **अल्लाह** पाक की रह़मत में गुज़ारूंगा। फ़रमाया कि मैं ने ऐसा ही किया तो मैं रात को किसी से न डरा। (افضل الصلوۃ علی سید السادات، ص22)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

एक बन्दए नेक के सबब पड़ोस के 100 घरों से बलाएं दूर हों

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह बात हमेशा याद रखिये ! अगर आप मज़्हबी वज़्अ़ क़त़्अ़ के मालिक हैं तो सन्जीदा रहिये और ख़ूब मिलन सार बन जाइये, आप का मन्सब ऐसा है कि आप की एक मुस्कराहट किसी की आयिन्दा नस्लों की तक़्दीर बदल सकती है और एक बार की बे रुख़ी या झिड़क किसी की आने वाली नस्लों को भी مَعَاذَاللہ गुमराही के गढ़े में झोंक सकती है लिहाज़ा हमेशा हर मिलने जुलने वाले के साथ **नरमी** नरमी और नरमी से पेश आइये और उन को नेकी की दा'वत देने में सुस्ती न फ़रमाइये । क्या पता आप की एक पर इन्फ़िरादी कोशिश किसी के ख़ानदान भर की इस्लाह़ का बाइ़स बन जाए ! अच्छों की बरकतों के भी क्या कहने ! दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 853 सफ़ह़ात की किताब, ''जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल'' जिल्द 1 सफ़ह़ा 809 पर है : हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक नेक मुसल्मान की वज्ह से उस के पड़ोस के 100 घरों से बला दूर फ़रमा देता है।'' फिर आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई : ﴿وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ﴾ (پ2، البقرۃ: 251) ''**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और अगर **अल्लाह** लोगों में बा'ज़ से बा'ज़ को दफ़्अ़ न करे तो ज़रूर ज़मीन तबाह हो जाए।'' (المعجم الاوسط للطبرانی، 3/129، حدیث:4080)

तू नेकों का फ़ैज़ान मौला अ़त़ा कर मुआ़फ़ फ़ज़्ल से मेरी हर इक ख़त़ा कर

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

तीन मदनी फ़ीसें

अल्लाह वालों की नेकी की दा'वत देने का अन्दाज़ भी निराला होता है। इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ वाकिआ़ सुनिये और इ़ब्रत से सर धुनिये : ह़ज़रते ह़ातिमे असम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को एक मालदार शख़्स ने ब इसरार दा'वते त़आ़म दी, फ़रमाया : मेरी येह तीन शर्तें मानो तो आऊंगा, (1) मैं जहां चाहूंगा बैठूंगा (2) जो चाहूंगा खाऊंगा (3) जो कहूंगा वोह तुम्हें करना पड़ेगा। उस मालदार ने वोह तीनों शर्तें मन्ज़ूर कर लीं। वलिय्युल्लाह की ज़ियारत के लिये बहुत सारे लोग जम्अ़ हो गए, वक़्ते मुक़र्ररा पर ह़ज़रते ह़ातिमे असम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه भी तशरीफ़ ले आए और जहां लोगों के जूते पड़े थे वहां बैठ गए। जब खाना शुरूअ़ हुवा, ह़ातिमे असम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपनी झोली में हाथ डाल कर सूखी रोटी निकाल कर तनावुल फ़रमाई। जब सिल्सिलए त़आ़म का इख़्तिताम हुवा मेज़बान से फ़रमाया : "चूल्हा लाओ और उस पर तवा रखो," हुक्म की ता'मील हुई, जब आग की तपिश से तवा सुर्ख़ अंगारा बन गया तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه उस पर नंगे पाउं खड़े हो गए और फ़रमाया : "मैं ने आज के खाने में सूखी रोटी खाई है।" येह फ़रमा कर तवे से नीचे उतर आए और ह़ाज़िरीन से फ़रमाया : अब आप ह़ज़रात भी बारी बारी इस तवे पर खड़े हो कर जो कुछ अभी खाया है उस का ह़िसाब दीजिये। येह सुन कर लोगों की चीख़ें निकल गईं, बयक ज़बान बोल उठे : "या सय्यिदी ! हम में इस की त़ाक़त नहीं कहां येह गर्म गर्म तवा और कहां हमारे नर्म नर्म क़दम ! हम तो गुनहगार दुन्यादार लोग हैं।" आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : जब इस दुन्यवी गर्म तवे पर खड़े हो कर आज सिर्फ़ एक वक़्त के खाने की ने'मत का ह़िसाब नहीं दे सकते तो कल बरोज़े

क़ियामत आप हज़रात ज़िन्दगी भर की ने'मतों का हिसाब किस तरह देंगे ! फिर आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने पारह 30 सूरतुत्तकासुर की आख़िरी आयत की तिलावत फ़रमाई : ﴿ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ﴾ (پ30، التکاثر 8) **"तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से ने'मतों से पुरसिश होगी।" येह रिक़्क़त अंगेज़ इर्शाद सुन कर लोग दहाड़ें मार मार कर रोने और गुनाहों से तौबा तौबा पुकारने लगे। (تذکرۃ الاولیاء، الجزء الاول، ص222 ملخصًا)

या इलाही ! जब हिसाबे ख़न्दए बे जा रुलाए
चश्मे गिर्याने शफ़ीए़ मुर्तजा का साथ हो
या इलाही ! जब बहें आंखें हिसाबे जुर्म में
उन तबस्सुम रेज़ होंटों की दुआ़ का साथ हो

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 133)

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : **तबस्सुम रेज़ :** मुस्कुराने वाले। **ख़न्दए बेजा :** फ़ुज़ूल हंसी। **चश्मे गिर्यां :** रोने वाली आंखें। **शफ़ीए़ मुर्तजा :** शफ़ाअ़त करने वाला जिस से उम्मीदें वाबस्ता की जाएं।

शर्हे कलामे रज़ा : "ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़" की मुनाजात के मज़्कूरा **दूसरे शे'र** में येह अ़र्ज़ की गई है : **या अल्लाह** पाक ! बरोज़े मह़शर जब मेरी ना फ़रमानियों का ह़िसाब मुझे ख़ौफ़ज़दा करे और आंखों से सैले अश्क रवां हो जाए, ऐ काश ! उस वक़्त दुखिया दिलों के चैन, नानाए ह़सनैन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुस्कुराते होंटों की दुआ़ मेरे शामिले ह़ाल हो जाए। **पहले शे'र** में अ़र्ज़ की गई है : **या अल्लाह** पाक जब यौमे आख़िरत मेरी फ़ुज़ूल हंसी का ह़िसाब किताब मुझे रुलाए ! काश ! उस वक़्त शफ़ाअ़ते कुब्रा का ताज पहनने वाले मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कि जिन की त़रफ़ उम्मीदें

वाबस्ता की जाती हैं वोह तशरीफ़ ला कर मेरी शफ़ाअ़त फ़रमाएं । **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !

हाए ! फिर ख़न्दए बे जा मेरे लब पर आया हाए ! फिर भूल गया रातों का रोना तेरा

(ज़ौक़े ना'त, स. 25)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

महशर की होलनाक मन्ज़र कशी

प्यारे प्यारे इस्लामी भाई ! देखा आप ने ! वलिय्ये कामिल ह़ज़रते ह़ातिमे असम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने किस क़दर अछूते अन्दाज़ में ह़िसाबे आख़िरत के मुतअ़ल्लिक़ **"नेकी की दा'वत"** इनायत फ़रमाई ! वाक़ेई **ह़श्र व नश्र** के मुआ़मलात इन्तिहाई तश्वीश नाक हैं, इन का नक़्शा खींचते हुए **ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **कीमियाए सआ़दत** में फ़रमाते हैं : (इन्सान) मरने के बा'द ऐसा बदबूदार मुर्दार हो जाएगा कि सब उस को देख कर अपनी नाक बन्द करेंगे और वोह क़ब्र में कीड़े मकोड़ों की ख़ूराक बनेगा और फिर रफ़्ता रफ़्ता ख़ाक हो जाएगा जो कि बिल्कुल ह़क़ीर व ज़लील चीज़ है अलबत्ता मरने के बा'द वोह जानवरों की त़रह़ ख़ाक ही रहता तो ग़नीमत था मगर अफ़्सोस कि ऐसा न होगा और येह ख़ाक रहने वाली दौलत उसे **मुयस्सर** न होगी बल्कि क़ियामत में उस को **क़ब्र** से उठाया जाएगा, हैबत व दहशत के मक़ाम पर रखा जाएगा, उस वक़्त वोह आस्मानों को देखेगा कि फटे हुए हैं, सितारे गिर पड़े हैं, चांद व सूरज बे नूर हो चुके हैं और पहाड़ रूई की गालों (या'नी रूई के गोलों) की त़रह़ परागन्दा (या'नी

मुन्तशिर) हैं, ज़मीन बदली हुई है, दोज़ख़ के फ़िरिश्ते कमन्दें (या'नी फन्दे) फेंक रहे हैं, दोज़ख़ गरज रहा है, फ़िरिश्ते हर एक के हाथ में आ'माल नामा दे रहे हैं, वोह तमाम उ़म्र में जो बुरे काम किये होंगे उन को देखता होगा, हर एक अपने अपने गुनाहों को पढ़ कर परेशान हो रहा होगा, उस से कहा जाएगा कि आ और जवाब दे कि तू ने ऐसा क्यूं किया ? वैसा क्यूं कहा ? क्यूं बैठा और क्यूं उठा ? क्यूं देखा और क्यूं सोचा ? अगर مَعَاذَاللہ जवाब न दे सकेगा तो उस को दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा ! उस वक़्त कहेगा : काश ! मैं ख़ूक (या'नी सुअर) या सग (या'नी कुत्ता) पैदा हुवा होता तो ख़ाक हो जाता क्यूं कि वोह (जानवर) इस अ़ज़ाब से महफ़ूज़ और आज़ाद हैं। पस जो शख़्स (बे अ़मल होने की सूरत में) सुअर और कुत्ते से बदतर हो उस को तकब्बुर और फ़ख़्र करना किस त़रह़ ज़ेबा है ! (کیمیائے سعادت، 717/2)

याद रख हर आन आख़िर मौत है मत तू बन अन्जान आख़िर मौत है
पेशतर मरने के करना चाहिये मौत का सामान आख़िर मौत है
बारहा इल्मी तुझे समझा चुके मान या मत मान आख़िर मौत है

पैदा न होने वाला क़ाबिले रश्क है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाई ! अब तो हम पैदा हो ही चुके हैं, वापसी ना मुम्किन है। जो अभी दुन्या में नहीं आए उन का इन्तिज़ार करने वालों या'नी बे औलादों के लिये ग़ौर करने का मक़ाम है कि इन्तिज़ार में उन की क्या निय्यत है ! **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की 692 सफ़ह़ात की किताब, **''कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब''** सफ़ह़ा 5

ता 6 पर दिया हुवा मज़्मून अपने अन्दर बहुत कुछ इ़ब्रत रखता है चुनान्चे लिखा है : आज दुन्या में जो बे औलाद होता है वोह उ़मूमन ख़ूब दिल जलाता है और बच्चा पाने के लिये न जाने कैसे कैसे जतन करता है। अगर इस का **मत्मह़े** नज़र (या'नी मक़्सदे अस्ली) फ़क़त़ घर की ज़ीनत और दुन्या की राह़त है, हुसूले औलाद से मक़्सूद आख़िरत की मन्फ़अ़त की कोई अच्छी निय्यत नहीं, तो ऐसा बे औलाद आदमी ना दानिस्ता त़ौर पर गोया "किसी" के दुन्या में पैदा होने और फिर बहुत बड़े इम्तिह़ान में मुब्तला होने की आरज़ू कर रहा है ! मेरी येह बात शायद वोही शख़्स समझ सकता है जो "बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़" में मुब्तला हो। एक ख़ाइफ़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के फ़रमान का ख़ुलासा है : मुझे बड़े से बड़े नेक बन्दे पर भी रश्क नहीं आता जो कि क़ियामत की होल नाकियों का मुशाहदा करेगा, मुझे सिर्फ़ उस पर रश्क आता है जो "कुछ भी" न हो। (या'नी पैदा ही न हो) (حلیۃ الاولیاء، 8/93، رقم:11470 ملخصاً) अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه ने ग़लबए ख़ौफ़ के वक़्त फ़रमाया : काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता ! (طبقات ابن سعد، 3/274)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

काश ! कि मैं दुन्या में पैदा न हुवा होता

(नज़्अ़ की सख़्तियों, क़ब्र की होल नाकियों, मह़शर की दुश्वारियों और जहन्नम की ख़ौफ़नाक वादियों का तसव्वुर बांध कर ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ते हुए अश्कबार आंखों से इस कलाम को पढ़िये)

काश कि मैं दुन्या में पैदा न हुवा होता
क़ब्रो ह़श्र का हर ग़म ख़त्म हो गया होता
आह ! सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है
काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता
आ के न फंसा होता मैं बत़ौरे इन्सां काश !
काश ! मैं मदीने का ऊंट बन गया होता
दो जहां की फ़िक्रों से यूं नजात मिल जाती
मैं मदीने का सचमुच कुत्ता बन गया होता
काश ! ऐसा हो जाता ख़ाक बन के त़यबा की
मुस्त़फ़ा के क़दमों से मैं लिपट गया होता
मैं बजाए इन्सां के कोई पौदा होता या
नख़्ल बन के त़यबा के बाग़ में खड़ा होता
गुलशने मदीना का काश ! होता मैं सब्ज़ा
या बत़ौरे तिन्का ही मैं वहां पड़ा होता
जां कनी की तक्लीफ़ें ज़ब्ह से हैं बढ़ कर काश !
मुर्ग़ बन के त़यबा में ज़ब्ह हो गया होता
शोर उठा येह महशर में ख़ुल्द में गया अ़त्तार
गर न वोह बचाते तो नार में गया होता

अगर उल्टे हाथ में आ'माल नामा मिला तो क्या होगा !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाई ! वाक़ेई मक़ामे इ़ब्रत है हम सभी को गुनाहों से बाज़ रहना और क़ियामत के होशरुबा ह़ालात पर सन्जीदगी से ग़ौर करना चाहिये जिस दिन **अल्लाह** पाक तमाम मख़्लूक़ के सामने गुनाहों भरा आ'माल नामा पढ़ने का हुक्म फ़रमाएगा, आह ! उस वक़्त ह़श्र की ख़ौफ़नाक सख़्तियां दरपेश होंगी, शिद्दते प्यास से ज़बान बाहर निकल पड़ी होगी, भूक से कमर टूट रही होगी। जन्नत में दाख़िले से रोक दिया गया होगा, हर क़िस्म की राह़त बन्द कर दी गई होगी, ऐसे तक्लीफ़ देह ह़ालात में **लाखों करोड़ों गुनाहों से पुर आ'माल नामा किस त़रह़ पढ़ कर सुनाया जा सकेगा !** आह ! हम येह भी नहीं जानते कि आ'माल नामा हमारे सीधे हाथ में दिया जाएगा या उल्टे हाथ में, जिस के उल्टे हाथ में आ'माल नामा दिया गया उस का क्या बनेगा ! पारह 29 **सूरतुल ह़ाक़्क़ह** आयत नम्बर 19 ता 37 में आ'माल नामे दिये जाने की कैफ़िय्यत बयान करते हुए इर्शादे

इलाही होता है, **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** तो वोह जो अपना नामए आ'माल दहने (या'नी सीधे) हाथ में दिया जाएगा, कहेगा : लो मेरे नामए आ'माल पढ़ो ★ मुझे यक़ीन था कि मैं अपने हिसाब को पहुंचूंगा ★ तो वोह मन मानते चैन में है ★ बुलन्द बाग़ में ★ जिस के ख़ोशे झुके हुए ★ खाओ और पियो रचता हुवा सिला उस का जो तुम ने गुज़रे दिनों में आगे भेजा ★ और वोह जो अपना नामए आ'माल बाएं (या'नी उल्टे) हाथ में दिया जाएगा, कहेगा : हाए ! किसी त़रह़ मुझे अपने नविश्ता (या'नी लिखा हुवा) न दिया जाता ★ और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है ★ हाए ! किसी त़रह़ मौत ही क़िस्सा चुका जाती ★ मेरे कुछ काम न आया मेरा माल ★ मेरा सब ज़ोर जाता रहा (फिर **अल्लाह** पाक जहन्नम के ख़ाज़िनों या'नी वहां मामूर फ़िरिश्तों को हुक्म देगा) ★ इसे पकड़ो फिर इसे त़ौक़ डालो ★ फिर इसे भड़क्ती आग में धंसाओ ★ फिर ऐसी ज़न्जीर में जिस का नाप सत्तर हाथ है इसे पिरो दो ★ बेशक वोह अ़ज़मत वाले **अल्लाह** पर ईमान न लाता था ★ और मिस्कीन को खाना देने की रग़बत न देता ★ तो आज यहां उस का कोई दोस्त नहीं ★ और न कुछ खाने को मगर दोज़ख़ियों का पीप ★ उसे न खाएंगे मगर ख़त़ाकार।

मीज़ां पे सब खड़े हैं आ'माल तुल रहे हैं रख लो भरम ख़ुदारा अ़त्तारे क़ादिरी का

(वसाइले बख़्शिश, स. 195)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

फ़ारूक़ व मुश्ताक़ के मज़ार की मदनी बहार

प्यारे प्यारे इस्लामी भाई ! दुन्या व आख़िरत की भलाइयां पाने और ख़ुद को क़ब्रो ह़श्र की होल नाकियों से बचाने की कोशिश का ज़ेह्न

बनाने के लिये आ़शिकाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के ''मदनी माह़ोल'' से हर दम वाबस्ता रहिये, नेकी की दा'वत के मदनी कामों में भरपूर हिस्सा लीजिये, नेक आ'माल के मुत़ाबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारिये, सुन्नतें सीखने सिखाने के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरे सफ़र की तरकीब फ़रमाते रहिये। आइये ! इस की तरग़ीब के लिये ''एक मदनी बहार'' सुनते हैं : चुनान्चे एक इस्लामी भाई के ह़ल्फ़िय्या (या'नी क़सम खा कर दिये हुए) बयान का लुब्बे लुबाब है, ग़ालिबन (1428 हि. या'नी 2006 ई.) में उन्हें अपने एक अ़ज़ीज़ के हमराह दा'वते इस्लामी की मजलिसे शूरा के मर्ह़ूम निगरान, ख़ुश इल्ह़ान ना'त ख़्वान, बुलबुले रौज़ए रसूल अलह़ाज क़ारी अबू उ़बैद मुश्ताक़ अ़त्तारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه और मजलिसे शूरा के रुक्न मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अलह़ाज अबू उ़मर मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मज़ाराते त़य्यिबात पर ह़ाज़िरी की सआ़दत ह़ासिल हुई। दो पहर का वक़्त था, اَلْحَمْدُلِلّٰه ऐन बेदारी के आ़लम में हम दोनों को ह़ाजी मुश्ताक़ अ़त्तारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के मज़ारे पुर अन्वार से अज़ाने ज़ोहर की आवाज़ साफ़ सुनाई दी। फिर कुछ देर बा'द मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की आवाज़ में इक़ामत सुनी फिर ह़ाजी मुश्ताक़ साह़िब की तक्बीरे तह़रीमा और दीगर तक्बीराते इन्तिक़ालात की आवाज़ों से येही समझ आई कि वोह मज़ार शरीफ़ में इमामत फ़रमा रहे हैं। जमाअ़त ख़त्म होने के बा'द दुआ़ की आवाज़ भी साफ़ सुनाई दी, दुआ़ ख़त्म होने के बा'द उन्हें ख़ुश्बू की महक महसूस हुई। उन्हों ने ह़ैरत व इस्ति'जाब के आ़लम में

एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई से मोबाइल फ़ोन पर राबिता़ किया, और वाक़िआ़ बयान किया। इस पर उन्हों ने मुबारक बाद देते हुए इस ईमान अफ़रोज़ "**मदनी बहार**" की रोशनी में **अल्लाह** पाक के मक़्बूल बन्दों औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم के तसर्रुफ़ात व इख़्तियारात और **दा'वते इस्लामी** की बरकात से आगाह किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه येह सुन कर वोह झूम उठे, **अल्लाह** पाक का करोड़हा करोड़ शुक्र कि उस ने इस नाज़ुक दौर में **दा'वते इस्लामी** का मुश्कबार **दीनी माहौल** अ़ता फ़रमाया। उन्हों ने दुआ़ कि **अल्लाह** पाक उन्हें **दा'वते इस्लामी** के दीनी कामों में शबो रोज़ मसरूफ़े अ़मल रहते हुए सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने और ईमान व आ़फ़िय्यत के साथ मरने की सआ़दत इ़नायत फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

साबित बुनानी का मज़ार में नमाज़ पढ़ना

प्यारे प्यारे इस्लामी भाईयो ! इस मदनी बहार से मा'लूम हुवा कि दा'वते इस्लामी वालों पर परवर दगार और मदनी सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बेह़द व बे शुमार करम है। **अल्लाह** पाक ●के नेक बन्दों का अपने मज़ार में नमाज़ पढ़ना कोई अचम्भे (या'नी ह़ैरत) की बात नहीं। औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم से ऐसा साबित है चुनान्चे ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते साबित बुनानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने दुआ़ मांगी : "ऐ **अल्लाह**! अगर तू किसी को क़ब्र में नमाज़ पढ़ने की इजाज़त देता है तो मुझे भी इजाज़त देना।" वफ़ात के बा'द देखा गया कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपनी क़ब्र में नमाज़ पढ़ रहे थे।

(حلیۃ الاولیاء، 2/362، رقم:2568)

अम्बिया क़ब्रों में नमाजें पढ़ते हैं

अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ السَّلَام भी ह़यात हैं और अपनी क़ब्रों में नमाज़ें पढ़ते हैं चुनान्चे **अल्लाह** पाक के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : اَلْاَنْبِیَاءُ اَحْیَاءٌ فِیْ قُبُوْرِھِمْ یُصَلُّوْن या'नी अम्बिया अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं, नमाज़ पढ़ते हैं। (مسند ابو یعلیٰ، 3/216، حدیث:3412) ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी क़ब्रे अन्वर में ज़िन्दा हैं और अज़ान व इक़ामत के साथ नमाज़ अदा फ़रमाते हैं, ऐसे ही दीगर अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ السَّلَام भी नमाज़ अदा फ़रमाते हैं।

(کشف الغمۃ عن جمیع الامۃ، الجزء الثانی، ص63)

चलो अच्छा हुवा काम आ गई दीवानगी अपनी वगर्ना हम ज़माने भर को समझाने कहां जाते

न जलती शम्अ़ महफ़िल में तो परवाने कहां जाते न होता दर नबी का तो येह दीवाने कहां जाते

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

रौज़ए अन्वर से अज़ान व इक़ामत की आवाज़

63 सिने हिजरी में **वाक़िअ़ए ह़र्रा** पेश आया जिस में ज़ालिम यज़ीदियों ने मदीनए मुनव्वरह पर चढ़ाई की, 700 सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان और मज़ीद आ़म मुसल्मान मिला कर दस हज़ार से ज़ाइद ह़ज़रात शहीद किये गए, **अहले मदीना** को ख़ूब लूटा गया, हज़ारों बाकिरह (या'नी कुंवारी) लड़कियों के साथ مَعَاذَاللّٰہ "ज़ियादती" की गई। मस्जिदे नबवी के सुतूनों से घोड़े बांधे गए, तीन दिन तक मस्जिद शरीफ़ में लोग नमाज़ से मुशर्रफ़ न हो सके। इस मौक़अ़ पर सिर्फ़ मश्हूर ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सईद बिन मुसय्यब رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ अपने आप को दीवाना बना कर वहां ह़ाज़िर रहे, दीवाना समझ कर यज़ीदी लोग आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ को शहीद करने से बाज़

रहे। आप رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : **हुर्रा** के दिनों में लोगों के वापस आने तक मैं हमेशा नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे मुबारक से अज़ानो इक़ामत की आवाज़ सुनता था। (دلائل النبوۃ لابی نعیم، 2/567 وغیرہ)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़ में अ़र्ज़ करते हैं :

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह मेरे चश्मे आ़लम से छुप जाने वाले !

(या'नी **या रसूलल्लाह ! अल्लाह** की क़सम ! आप ह़यात हैं, ख़ुदा की क़सम ! आप ज़िन्दा हैं, ज़ाहिरी आंखों से मुझे ऐ मेरे नज़र न आने वाले !)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मोमिन की फ़िरासत से डरो

इमामुत्ताइफ़ा ह़ज़रते शैख़ अबुल क़ासिम जुनैद बग़दादी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने फ़रमाया : (मेरे पीरो मुर्शिद) **ह़ज़रते** शैख़ सरी सक़ती رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ मुझ से फ़रमाया करते थे कि लोगों में वा'ज़ो नसीह़त किया करो मगर मैं ख़ुद को इस का अह़ल नहीं समझता था इस लिये हिम्मत न होती थी। एक शबे जुमुआ़ जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में नवाज़ कर मुझ से फ़रमाया : "लोगों को नसीह़त करो।" मैं बेदार हुवा और सुब्ह़ का इन्तिज़ार किये बिग़ैर (अपने पीर रोशन ज़मीर) ह़ज़रते शैख़ सरी सक़ती رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गया। (मेरे अ़र्ज़ करने से पहले ही) उन्हों ने (ग़ैब की ख़बर देते हुए) फ़रमाया : "जब तक मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद न फ़रमाया तुम ने मेरे कहने का ए'तिबार नहीं किया।" ह़ज़रते शैख़ जुनैद बग़दादी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने उसी सुब्ह़ से जामेअ़ मस्जिद में

बयान शुरूअ़ कर दिया। लोगों में येह बात फ़ौरन फैल गई कि आज से जुनैद बग़दादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ बयान फ़रमाने लगे हैं। एक दिन किसी नौ जवान ने इज्तिमाअ़ में खड़े हो कर सुवाल किया। ऐ शैख़ ! बताइये हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस इर्शादे मुबारक : اِتَّقُوْا فِرَاسَةَ الْمُؤْمِنِ فَاِنَّهٗ يَنْظُرُ بِنُوْرِ اللّٰهِ या'नी "मुअमिन की फ़िरासत से डरो क्यूं कि वोह **अल्लाह** के नूर से देखा करता है।" (ترمذی،5/88،حدیث:3138) का क्या मत़लब है ? उस का सुवाल सुन कर चन्द लम्ह़ों के लिये ह़ज़रते शैख़ जुनैद बग़दादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने सर झुका लिया फिर सरे मुबारक उठा कर (ग़ैब की ख़बर देते हुए) इर्शाद फ़रमाया : ऐ नौ जवान ! तू नसरानी (या'नी क्रिस्चेन) है और अब तेरे मुसल्मान होने का वक़्त आन पहुंचा है, ईमान ले आ। वोह जवान जो कि वाक़ेई क्रिस्चेन था। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ येह **करामत** देख कर उसी वक़्त मुसल्मान हो गया। (روض الریاحین،ص157) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم

निगाहे वली में वोह तासीर देखी   बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

अल्लाह अपने औलिया को इल्मे ग़ैब अ़त़ा फ़रमाता है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाई ! इस वाक़िए़ से मुबल्लिग़ का मक़ाम मा'लूम हुवा। سُبْحٰنَ اللّٰہ ! शैख़ जुनैद बग़दादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ बत़ौरे इन्किसारी अपने आप को बयान के लिये ना अह्ल तसव्वुर फ़रमाते थे, ह़ालां कि **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो करम से आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ज़बर दस्त आ़लिम थे, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ पर करम बालाए करम येह हुवा कि ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **बयान** का हुक्म फ़रमाया। इस वाक़ेए़

से येह भी मा'लूम हुवा कि मेरे मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ब अ़त़ाए रब्बुल उ़ला **ग़ैब का इ़ल्म** रखते हैं आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मा'लूम था कि जुनैदे बग़्दादी को इन के पीरो मुर्शिद कह रहे हैं फिर भी येह **बयान** करने से झिजक्ते हैं, लिहाज़ा ब नफ़्से नफ़ीस ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर बयान का हुक्म सादिर फ़रमाया। येह भी जानने को मिला कि **फ़ैज़ाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ह़ज़राते औलिया को भी **इ़ल्मे ग़ैब** होता है जभी तो ह़ज़रते **सरी सक़त़ी** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने मुरीदे ख़ास का ख़्वाब जान लिया। नीज़ ह़ज़रते शैख़ **जुनैदे बग़्दादी** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने भी तो नसरानी या'नी क्रिस्चेन को मुअमिनाना फ़िरासत से पहचान कर **ग़ैब** की ख़बर से मालामाल अछूते अन्दाज़ में उसे नेकी की दा'वत इ़नायत फ़रमाई और वोह करामत भरी नेकी की दा'वत की बरकत से हाथों हाथ इस्लाम के दामने रह़मत में आ गया।

फ़िरासत की ता'रीफ़

ह़दीसे मुबारका में "फ़िरासत" का ज़िक्र है इस के मा'ना भी समझ लीजिये। **फ़िरासत** का मा'ना है : **अल्लाह** पाक अपने औलिया के दिलों में वोह चीज़ डालता है जिस से उन्हें बा'ज़ लोगों के ह़ालात का इ़ल्म हो जाता है। (النہایہ، 3/383) सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने प्यारे प्यारे आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **इ़ल्मे ग़ैब** शरीफ़ से मालामाल निगाहे बे मिसाल का औज व कमाल बयान करते हुए क्या ख़ूब शे'र मोज़ूं किया है :

सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र, दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
मलकूतो मुल्क में कोई शै नहीं वोह जो तुझ पे इ़यां नहीं

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : **सरे अ़र्श :** अ़र्श के ऊपर। **मलकूत :** फ़िरिश्तों के रहने की जगह। **इयां** ज़ाहिर।

शर्हे कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ! अ़र्श के ऊपर और फ़र्श या'नी ज़मीन के अन्दर का सब कुछ आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم के पेशे नज़र है। दुन्या जहान में कोई भी ऐसी शै नहीं जो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم पर ज़ाहिर न हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मेरे दोस्त का ख़्वाब

प्यारे प्यारे इस्लामी भाईयो ! मेरे मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ग़ैब की बातें जानते हैं। आइये इस ज़िम्न में क़ियामे **दा'वते इस्लामी** के क़ब्ल का सुना हुवा ईमान अफ़रोज़ ख़्वाब समाअ़त फ़रमाइये : चुनान्चे एक इस्लामी भाई ने सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ को जो कुछ बताया उस का ख़ुलासा है : اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन्हें ख़्वाब में जनाबे रिसालते मआब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की सआ़दत मिली, हिम्मत कर के अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ! क्या आप को **इल्मे ग़ैब** है ? इर्शाद फ़रमाया : हां। इस के बा'द सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ने एक आयते क़ुरआनी सुनाई, सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم के लबहाए मुबारका से तिलावत, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم की ख़ुश आवाज़ी और आदाएगिये हुरूफ़ का हुस्ने उस्लूब (या'नी हुरूफ़ की अपने मख़ारिज से अदाएगी की ख़ूब सूरती) **मरह़बा !** ऐसी उ़म्दा और शीरीं आवाज़ व क़िराअत उन्हों ने कभी नहीं सुनी थी, आयते शरीफ़ा वोह भूल गए, हां इतना याद रहा कि उस के आख़िर में लफ़्ज़ "بِضَنِيْن" था इस पर मैं ने (या'नी सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ ने) पारह 30

सूरतुत्तक्वीर की आयत नम्बर डबल बारह (24) सुनाई : "﴿وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ۚ﴾" वोह इस्लामी भाई बोल उठे : हां हां येही आयते करीमा थी। सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ ने उन को आयते करीमा का तरजमा बताया और अ़र्ज़ की, कि यक़ीनन सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** पाक की रह़मत व इ़नायत से **इ़ल्मे ग़ैब** है।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाईयो ! इस **वाकिए़** से कोई इस **वस्वसे** में न पड़े कि लो भई ! ख़्वाबों से **इ़ल्मे ग़ैब** साबित किया जा रहा है ह़ालां कि ग़ैरे नबी का देखा हुवा ख़्वाब तो हुज्जत (या'नी दलील) ही नहीं। सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ इक़्रार करता है कि वाक़ेई़ हर मस्अला ख़्वाब से ह़ल नहीं किया जाता, मगर यहां ख़्वाब से नहीं ख़्वाब में अ़ता कर्दा जवाब में बयान कर्दा क़ुरआनी आयत से **इ़ल्मे ग़ैब** का सुबूत पेश किया जा रहा है और वोह आयते करीमा वाक़ेई़ इ़ल्मे ग़ैबे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दाल्ल (या'नी दलील) है। लिहाज़ा मज़्कूरा आयत मअ़ तरजमा मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : ﴿وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ۚ﴾ (پ30، التکویر:24) "**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और येह नबी ग़ैब बताने में बख़ील नहीं।"

इस आयते मुबारका से मा'लूम हुवा कि मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **ग़ैब** बताते हैं और ज़ाहिर (या'नी UNDERSTOOD) है कि बताएगा वोही जिस को इ़ल्म होगा। तो बेशक, बिला शुबा रब्बुल आ़लमीन की इ़नायत से रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **इ़ल्मे ग़ैब** की दौलत से मालामाल हैं। बारगाहे रिसालत में आ़शिक़े माहे रिसालत आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अ़र्ज़ करते हैं :

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

शर्हे कलामे रज़ा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप की शाने अ़ज़मत निशान के क्या कहने ! शबे मे'राज ऐन जागती ह़ालत में आप ने अपने मुबारक सर की आंखों से अपने पाक परवर दगार का दीदार किया, तो यूं **अल्लाह** पाक जो कि ग़ैबुल ग़ैब है वोह भी अपने फ़ज़्लो करम से आप पर ज़ाहिर व आशकार हो गया तो अब कोई और ग़ैब आप से किस त़रह़ निहां या'नी छुपा रह सकता है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

एक ठोकर में उ़हुद का ज़ल्ज़ला जाता रहा

"बुख़ारी शरीफ़" में है : ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि सरकारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म और ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْهُم उ़हुद पहाड़ पर तशरीफ़ ले गए तो वोह (ख़ुशी के मारे) हिलने लगा। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे ठोकर मार कर फ़रमाया : اُثْبُتْ اُحُدُ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ نَبِيٌّ وَّصِدِّيقٌ وَّشَهِيْدَانِ। उ़हुद ! ठहर जा क्यूं कि तेरे ऊपर एक नबी, एक सिद्दीक़ और दो शहीद हैं।

(بخاری، 2/524، حدیث:3675)

एक ठोकर में उ़हुद का ज़ल्ज़ला जाता रहा रखती हैं कितना वक़ार अल्लाहु अक्बर एड़ियां

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

मज़्कूरा ह़दीस से इ़ल्मे ग़ैब साबित होता है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाईयो ! "बुख़ारी शरीफ़" की मज़्कूरा ह़दीसे पाक से اَظْهَرُ مِنَ الشَّمْسِ وَاَبْيَنُ مِنَ الْاَمْس (या'नी सूरज से ज़ियादा रोशन और रोज़े गुज़श्ता से ज़ियादा क़ाबिले यक़ीन) हुवा कि हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अ़त़ाए इलाही

से **इल्मे ग़ैब** है जभी तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जबले उहुद शरीफ़ से इर्शाद फ़रमा दिया कि तुझ पर "एक नबी" एक सिद्दीक़ और **दो शहीद** हैं। किसी के बारे में उस के जीते जी बता देना कि येह **शहीद** है, येह **ग़ैब** की ख़बर नहीं तो और क्या है। इस ह़दीसे पाक के तह़्त ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मिरआत जिल्द 8 सफ़ह़ा 408 ता 409 पर फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** (पाक) के मक़्बूल बन्दे सारी ख़ल्क़त (या'नी शजर व ह़जर दरिया व पहाड़ सभी) के मह़बूब (और प्यारे) होते हैं, इन की तशरीफ़ आवरी से सब ख़ुशियां मनाते हैं, उन्हें पथ्थर और पहाड़ भी जानते हैं। मज़ीद फ़रमाते हैं : येह भी मा'लूम हुवा कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) सब के अन्जाम (या'नी अच्छा या बुरा ख़ातिमा होने) से ख़बरदार हैं कि फ़रमाया : इन में से दो सह़ाबा **शहीद** हो कर वफ़ात पा जाएंगे। (मिरआतुल मनाजीह़, 8/408)

रब की अ़त़ा से सब कुछ जाने देखे बईदो क़रीब

ग़ैब की ख़बरें देने वाला अल्लाह का वोह ह़बीब

اللّٰه اللّٰه، اللّٰه هُو، لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُو

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ग़ैब की ता'रीफ़

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه "तफ़्सीरे नईमी" में फ़रमाते हैं : **ग़ैब** के (लफ़्ज़ी) मा'ना ग़ाइब या'नी छुपी हुई चीज़। इस्ति़लाह़ (या'नी मख़्सूस। मुरादी मा'ना) में **ग़ैब** वोह चीज़ कहलाती है जो कि ज़ाहिरी बाति़नी ह़वास (या'नी मह़सूस करने की क़ुव्वतों) और अ़क़्ल से छुपी हो या'नी न तो आंख, नाक, कान वग़ैरा से मा'लूम हो सके और न ग़ौरो फ़िक्र

से अ़क़्ल में आ सके। (तफ़्सीरे नईमी 1/121) मसलन जन्नत हमारे लिये इस वक़्त ग़ैब है क्यूं कि इस को हम ह़वास (या'नी आंख, नाक, कान वग़ैरा) से मा'लूम ही नहीं कर सकते। ग़ैब वोह है जो हम से पोशीदा हो और हम अपने ह़वासे ख़म्सा या'नी देखने, सुनने, सूंघने, चखने और छूने से जान न सकें और ग़ौरो फ़िक्र से अ़क़्ल उसे मा'लूम न कर सके। (تفسیر بیضاوی، 1/116 ملخصاً وغیرہ)

इल्मे ग़ैब के मुतअ़ल्लिक़ अकाबिरीने उम्मत के अक़्वाल

फ़ैज़ाने अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ السَّلَام से औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِم को भी इ़ल्मे ग़ैब अ़त़ा किया जाता है चुनान्चे इस ज़िम्न में अकाबिरीने उम्मत के अक़्वाल मुलाह़ज़ा फ़रमाइये : ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : हमारा अ़क़ीदा है कि बन्दा तरक़्क़िये मक़ामात पा कर सिफ़्ते रूह़ानी तक पहुंचता है उस वक़्त उसे इ़ल्मे ग़ैब ह़ासिल होता है। (مرقاۃ المفاتیح، 1/128) मज़ीद एक और मक़ाम पर लिखते हैं : नूरे ईमान की क़ुव्वत बढ़ने से बन्दा ह़क़ाइक़े अश्या (या'नी चीज़ों की ह़क़ीक़तों) पर मुत्त़लअ़ होता है और उस पर न सिर्फ़ ग़ैब बल्कि ग़ैबुल ग़ैब या'नी ग़ैब का ग़ैब भी रोशन हो जाता है। (مرقاۃ المفاتیح، 1/119)

इमाम इब्ने ह़जर رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : औलिया को किसी वाक़िए़ या वक़ाएअ़ (या'नी वाक़िआ़त) में **इ़ल्मे ग़ैब** ह़ासिल होता है येह बिल्कुल दुरुस्त है, उन में से काफ़ी ह़ज़रात से ऐसा ज़ाहिर हो कर मुश्तहर (या'नी मश्हूर भी) हुवा। (اعلام بقواطع الاسلام، ص359)

सिल्सिलए आ़लिया नक़्शबन्दिया के इमाम ह़ज़रते अ़ज़ीज़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाया करते : "इस गुरौहे औलिया की नज़र में ज़मीन दस्तर ख़्वान की त़रह़ है।" (نفحات الانس، ص387) या'नी जिस त़रह़ दस्तर ख़्वान की हर

चीज़ नज़र आ जाती है इसी त़रह़ ज़मीन की हर चीज़ इन को दिखाई देती है। ह़ज़रते ख़्वाजा बहाउल ह़क़्क़े वद्दीन नक़्शबन्दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه येह क़ौल नक़्ल कर के फ़रमाते : "हम कहते हैं कि (ज़मीन उन के लिये) नाख़ुन की सत़ह़ की त़रह़ है, कोई चीज़ उन की नज़र से ग़ाइब नहीं।" (اعلام بقواطع الاسلام، ص387-388)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **तफ़्सीरे नईमी** जिल्द 4 सफ़ह़ा 371 पर "तफ़्सीरे रूहुल मआ़नी" के ह़वाले से लिखते हैं : "बा'ज़ अहले कश्फ़ औलियाउल्लाह भी ग़ुयूब (या'नी ग़ैबों) पर मुत्त़लअ़ किये जाते हैं मगर **नबी** के वासित़े से, बिला वासित़ा नहीं।" (روح المعانی،4/475)

हमारे **ग़ौसे आ'ज़म** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه "क़सीदए ग़ौसिया" में फ़रमाते हैं :

نَظَرْتُ اِلٰی بِلَادِ اللهِ جَمْعًا
كَخَرْدَلَةٍ عَلٰی حُكْمِ التِّصَالِیْ

(तरजमा : मैं ने **अल्लाह** पाक के सारे शहरों को इस त़रह़ देख लिया जैसे राई के चन्द दाने मिले हुए हों)

ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने "अख़्बारुल अख़्यार" सफ़ह़ा 15 पर ह़ुज़ूरे ग़ौसुल आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का येह इर्शादे मुअ़ज़्ज़म नक़्ल किया है : "अगर शरीअ़त ने मेरे मुंह में लगाम न डाली होती तो मैं तुम्हें बता देता कि तुम ने घर में क्या खाया है और क्या रखा है, मैं तुम्हारे ज़ाहिर व बात़िन को जानता हूं क्यूं कि तुम मेरी नज़र में आर पार नज़र आने वाले शीशे (या'नी कांच) की त़रह़ हो।" ह़ज़रते मौलाना रूम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मस्नवी शरीफ़ में फ़रमाते हैं :

لَوحِ مَحفوظ اَست پیشِ اولیاء
اَزچہ مَحفوظ اَست محفوظ اَز خطا

(या'नी लौहे महफ़ूज़ **औलियाउल्लाह** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم के पेशे नज़र होती है जो कि हर ख़ता से महफ़ूज़ होती है)

शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी में "**सूरतुल जिन्न**" की तफ़्सीर में लिखते हैं : "लौहे महफ़ूज़ की ख़बर रखना और उस की तहरीर देखना बा'ज़ औलियाउल्लाह से ब त़रीक़े तवातुर (या'नी तसल्सुल के साथ) मन्कूल है।"

नोट : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब "नेकी की दा'वत" का मज़्मून यहां ख़त्म हुवा।

अल्लाह वालों की सिफ़ात

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه वलियों की सिफ़ात बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं कि वलिय्युल्लाह वोह है जो फ़राइज़ की अदाएगी से **अल्लाह** पाक का क़ुर्ब ह़ासिल करे और **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त में मश्गूल रहे और उस का दिल **अल्लाह** तआ़ला के नूरे जलाल की मा'रिफ़त में मुस्तग़रक़ (या'नी डूबा हुवा) हो, जब देखे क़ुदरते इलाही के दलाइल को देखे और जब सुने, **अल्लाह** पाक की आयतें ही सुने और जब बोले तो अपने रब की सना ही के साथ बोले और जब ह़रकत करे, इत़ाअ़ते इलाही में ह़रकत करे और जब कोशिश करे तो उसी काम में कोशिश करे जो क़ुर्बे इलाही का ज़रीआ़ हो, **अल्लाह** पाक के ज़िक्र से न थके और चश्मे दिल (दिल की आंख) से ख़ुदा के सिवा ग़ैर को न देखे। येह सिफ़त औलिया की है, बन्दा जब इस ह़ाल पर पहुंचता है तो **अल्लाह** पाक उस का वली व नासिर और मुईनो मददगार होता है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 11, सूरए यूनुस, तह़्तल आयत, 62)

अगले हफ़्ते का रिसाला